हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL4**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): अनिल कुमार यादव

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 4, 27/8/17

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	0	9	7	6	4	6

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

अच्छा प्रयास

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 126

टिप्पणी (Remarks): अत्यन्त अपेक्षित

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली–9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त;
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ एवं प्रसंग!-

प्रस्तुत पद्य खण्ड आधुनिक हिन्दी साहित्य के 'महाप्राण' कवि निराला की " राम की शक्ति पूजा" नामक लम्बी कविता से लिया गया है। जब राम अपने को युद्ध में हताशा, निराशा में पाते हैं तब उनके पक्ष में सबसे अनुभवी जाम्वन्त ने उनको यह सुझाव दिया जो इन पंक्तियों में व्यक्त है।

व्याख्या !-

जाम्वन्त ने राम से कहा कि यदि रावण अधर्मी और पापी होकर भी 'शक्ति' को अपने पक्ष में कर लिया है तो आप तो सत्य के लिए संघर्ष कर रहे हैं। राम आप निश्चय ही उसे समाप्त कर देंगे। लेकिन राम को शक्ति की "मौलिक कल्पना" करनी पड़ेगी। और तब तक युद्ध से दूर को हटा लेना चाहिए।

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :-

① उपर्युक्त पंक्तियाँ "राम की शक्ति पूजा" की केंद्रीय संवेदना को व्यक्त करती है। यहीं से कविता में नया मोड़ आता है।

② "शक्ति की मौलिक कल्पना" की जरूरत तत्कालीन भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को भी था क्योंकि असहयोग और सविनय अवज्ञा आन्दोलन असफल हो चुका था।

③ जब शक्ति के साधनों का परम्परागत तरीका असफल हो जाए तो 'मौलिक कल्पना की आवश्यकता होती है।"

④ भाषा तत्सम प्रधान की है- 'त्रस्त'

⑤ प्रतीक का प्रयोग भी है।

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) काम-मंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का है परिणाम,
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल बनाते हो असफल भवधाम।
दुःख की पिछली रजनी बीच विकसिता सुख का नवल प्रभात,
एक परदा यह झीना नील छिपाये है जिसमें सुख गात।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी साहित्य के अंतिम महाकाव्य "कामायनी" से ली गयी हैं। इसकी रचना जयशंकर प्रसाद ने की है।

उक्त पंक्तियों दैवीय सभ्यता के विनाश से हताश और हारे मनु को श्रद्धा कर्म करने के लिए प्रेरित कर रही है।

व्याख्या :-

श्रद्धा, मनु से कहती है कि तुम कर्म को छोड़कर, ईश्वर की मूल भावना को असफल बना रहे हो। कर्म के माध्यम से तुम अपने पुराने दुःखों को भुला कर सुख का नया सवेरा देख सकते हो। श्रद्धा कहती है कि अपनी हताशा और निराशा के परदे से निकलो और देखो सुख कितना सुन्दर है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :-

(1) प्रसाद पर 'प्रत्यभिज्ञावाद' दर्शन का प्रभाव दिखाई पड़ रहा है।

(2) प्रसाद यहाँ कर्म को मंगल से जोड़ रहे हैं तथा "कर्म ही जीवन" है के सिद्धान्त को प्रतिपादित कर रहे हैं।

(3) "राम की शक्ति पूजा" में भी शक्ति कर्म के लिए "शक्ति की मौलिक कल्पना" की बात की गयी है।

(4) भाषा में तत्सम प्रभाव है।

(6) छायावादी प्रभाव के रूप में "नवल प्रभात" जैसे शब्दों का प्रयोग।

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) "धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन, जिसके लिये सदा ही किया शोध!
जानकी! हाय, उद्धार प्रिया का हो न सका।"
वह एक और मन रहा राम का जो न थका;

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत पंक्तियाँ "राम की शक्ति पूजा" से ली गयी है। इसके रचयिता महाकवि निराला जी हैं।

यह पंक्तियाँ कविता के अन्त भाग से ली गयी हैं जब राम शक्ति की "मौलिक कल्पना" कर रहे होते हैं और अंतिम पुष्प चोरी हो जाता है। राम का आत्मधिक्कार है।

व्याख्या :-

राम का आत्मधिक्कार चरम पर है वे कहते हैं कि उनका जीवन सदा विरोधों से भरा रहा। अपने उन साधनों को धिक्कारते हैं जिनके लिए उन्होंने जीवन का संघर्ष किया। राम यहाँ आत्मधिक्कार के साथ सीता के प्रति अपने कर्तव्य को भी नहीं भूलते हैं उनके उद्धार के लिए उनका 'एक मन' नहीं था है जो नैतिकता, दैन्यता नहीं जानता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष:-

① कविता का यह "चरम बिन्दु" है। यह कविता की नाटकीयता का उत्कर्ष है।

② राम का सीता के आत्माधिकार व अपराधबोध दिखाता है। यहाँ "ईश्वर का 'मानवीकरण'" हो गया है।

③ "सीता मुक्ति" कविता का इस कथ्य बनकर उभरती हैं ये पंक्तियाँ।

④ भाषा खड़ी बोली तत्समी प्रकार की।

⑤ प्रतीकात्मकता का प्रयोग।

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'राम की शक्ति पूजा' के आधार पर निराला की भक्ति-भावना का विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'सरोज स्मृति' के टूटे हुए निराला 'राम की शक्ति पूजा' में शक्ति की "मौलिक कल्पना" करते हैं। उनकी इस कल्पना का आधार क्या था? वे शक्ति उनको कैसे उत्पन्न होती है? कुछ आलोचक इसके लिए निराला के आध्यात्मिक रूप को आगे लाते हैं। इससे निराला की भक्ति भावना को समझना आवश्यक हो जाता है।

निराला पर 'नव्य वेदांत' का स्पष्ट प्रभाव है। वे विवेकानंद टैगोर तथा गाँधी से प्रभावित नज़र आते हैं। वे शंकर के अद्वैतवाद से कम प्रभावित हैं जहाँ जगत को मिथ्या मान लिया जाता है। निराला ने जगत को मिथ्या नहीं माना है। वे जगत में सत्य की खोज करते हैं और शक्ति की 'मौलिक कल्पना' में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समुद्र को लेते, दिशाओं को भुजा तथा पर्वत को शक्ति का रूप मानकर अपनी साधना प्रारम्भ करते हैं।

राम का मानवीकरण यहाँ निराला की भक्ति भावना का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष है। निराला के यहाँ राम तुलसी से भिन्न वे राम में संशय व निराशा भी दिखाते हैं। इसलिए भक्ति के इस स्तर पर वे तुलसी से ज्यादा वास्तविक नज़र आते हैं।

निराला ने अपने संस्कारों के कारणों शैव - शाक्त - वैष्णव में समन्वय स्थापित करते हैं। वे कहते हैं कि यदि हनुमान शक्ति या शक्ति पर हमला करेंगे तो शिव नाराज होंगे और ये बात राम को अच्छी नहीं लगेगी।

निराला अपनी भक्ति में समन्वय चेतना का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करते हुए, भक्ति और योग में भी समन्वय स्थापित करती है वे अपनी भक्ति में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शक्ति की मौलिक कल्पना में साधनात्मक रहस्यवाद की तरह हठ योग को अपनाते हैं। सगुण राम हठयोग करके 'शक्ति' की पूजा करते है।

निराला की भक्ति भावना में नारी को विशेष स्थान प्राप्त है। एक तरफ तो "जानकी" "प्रिया" के उद्धार का प्रयास है और उसकी मुक्ति के लिए सम्पूर्ण प्रयास करते हैं इसकी ओर शक्ति को ब्रह्मा - विष्णु - महेश के स्तर से ऊपर बताते हैं। ये संस्कार उन्हें बंगाल से मिला। यद्यपि अपनी युग की सीमा के कारण निराला के प्रिय कवि तुलसीदास और हिन्दी के प्रथम आधुनिक कवि कबीर अपनी भक्ति भावना में नारी को "माया" और "ठगनी" का स्थान ही दे पाये। निराला ने "प्रिया" के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्तर तक पहुँचाया। "पुत्री-भाव" और पत्नी-भाव के माध्यम से निराला नारी-भाव के अग्रदूत बने।

अतः निराला की भक्ति भावना वैष्णव परंपरा से प्रभावित है इसमें समन्वय भी है और बंगाल परंपरा का प्रभाव भी।

अच्छा

11½/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) निराला के आत्मसंघर्ष के परिप्रेक्ष्य में 'राम की शक्तिपूजा' पर प्रकाश डालिये। 15

दूधनाथ सिंह जैसे आलोचक निराला के सन्दर्भ में मानते हैं कि राम का आत्मसंघर्ष, वास्तव में निराला का अपना संघर्ष है जो 'शक्ति पूजा' में दिखाई पड़ता है। इसके लिए उन्होंने निराला के 'महाप्राणत्व' की व्याख्या संवेदना, बिम्ब और प्रतीकों के माध्यम से की है।

'राम की शक्ति पूजा' मे राम का संघर्ष निराला के स्वयं के आत्म संघर्ष को दिखाता है। वे कहते हैं कि 'सरोज स्मृति' में निराला ने लिखा—

"दुख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूँ आज जो नहीं कही"

जो 'राम की शक्ति पूजा' के राम कहते हैं—

" धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

धिक् साधन जिसके लिए किया शोध,
जानकी! हाय उद्धार प्रिया का हो न सका।"

इन दोनों पंक्तियों साम्य है। निराला का अपना जीवन भी अंधेरों से भरा पड़ा है। उनके पास उनकी पत्नी और पुत्री दोनों नहीं हैं। आर्थिक स्तर पर भी टूट चुके हैं। साहित्यिक पहचान का भी संकट है। "गत कर्मों का अर्पण" कर के वे 'सरोज का "तर्पण" करते हैं। यही भाव राम का भी है। राम के जीवन में भी "अमानिशा" है "गगन घन अन्धकार" है। "दिशा का ज्ञान खो रहा है। राम और निराला का आत्म संघर्ष एक ही जैसा है।

राम जिस प्रकार अन्धकार से भरे पड़े हैं उसी तरह का भाव निराला का भी निराला भी सरोज

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्मृति में डूब चुके हैं। और "राम की शक्ति पूजा" के द्वारा "वह एक और मन रहा राम का जो न थका।" वही हाल निराला का है।

दूधनाथ सिंह ने एक और स्थान पर राम और निराला की तुलना की है। राम का वर्णन 'शक्ति पूजा' में है वह निराला के व्यक्तित्व से मेल खाता है।

इस प्रकार 'राम की शक्ति पूजा' निराला और राम दोनों के आत्मसंघर्ष को व्यक्त करती है परन्तु प्रतीकों के माध्यम से यह क्रांति, शक्ति चेतना और स्वतंत्रता आंदोलन को अभिव्यक्ति देती है।

अच्छा

8/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) "भारत-भारती में निहित नवजागरण चेतना की सीमाओं का उद्‌घाटन कीजिये। 15

'दो संस्कृतियों' के टकराहट से उत्पन्न चेतना को नवजागरण कहा जाता है। जिसमें आत्म-मूल्यांकन, आत्मविश्लेषण, आत्म-परिष्कार शामिल होता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और मैथिलीशरण गुप्त में यह नवजागरण की चेतना सबसे स्पष्ट रूप में दिखाई पड़ती है। "भारत-भारती" इसका सबसे अच्छा उदाहरण है। इसमें अपने इतिहास के प्रति रोमानी भाव भी है। वर्तमान की समस्या का वर्णन भी है इसके साथ ही भविष्य का स्वप्न भी है।

"भारत भारती" सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की रचना है। 1910 के दशक में इसकी सफलता का राज इसमें निहित देशभक्ति व राष्ट्रवाद तथा नवजागरण की चेतना थी। इसमें भारत के उत्कर्ष-पतन का वर्णन था। इसने हमारे हजारों भारतीयों को भी हिन्दी सिखी।

लेकिन 'भारत-भारती' की नवजागरण चेतना पर आक्षेप भी

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

लगाया जाता है कि यह एक पक्षीय ऐतिहासिक दृष्टिकोण से लिखी गयी है। इसमें अतीत के प्रति रोमानी भाव है, बहुत बड़ा चढ़ाकर दिखाया गया है। लेकिन ये जातिवाद का जवाब इतना जातिवाद हो जाता है। ब्रिटेन के 'White man Burden' का जवाब था।

"भारत-भारती" में अंग्रेजो को लेकर दोहरा चरित्र दिखाई देता है, जैसा भारतेन्दु के यहाँ दिखाई देता है। अंग्रेजो की आलोचना पर्याप्त नहीं की गयी है। ऐसा इसलिए भी हो सकता है कि यह पुस्तक को प्रतिबन्ध से बचाया जाए।

इसके अलावा मुसलमानों को लेकर तथा बौद्ध व जैन धर्मों को लेकर इनकी आलोचना की गयी है, जबकि ये धर्म भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग बन चुके हैं। इससे अलगाव हो सकता है।

इनकी नवजागरण चेतना पर आर्यवादी, हिंदू और महिलावाद के विरोधी होने का भी आरोप लगाता है। यह दृष्टि से पुनरोत्थानवादी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

है। क्योंकि 'भारत भारती' प्राचीन काल को स्वर्ण युग मानती है। तथा मध्यकाल को अन्धकार युग मानती है।

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं "भारत भारती" में 'नव जागरण' चेतना अपने समय के परिस्थितियों के दबाव में निर्मित हुई थी। अपनी सीमाओं के बाद भी यह एक अति लोकप्रिय रचना थी।

अच्छा प्रयास

8½ / 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'कामायनी मानव-मन एवं मानवता के विकास की कहानी है।' इस मत के संदर्भ में कामायनी का विवेचन कीजिये। 20

कोई रचना जितना अधिक प्रतीकात्मक अर्थ धारण करती है उतनी ही महान रचना बनने की इसकी संभावना अधिक होती है। 'कामायनी' इस अर्थ में महत्वपूर्ण है। प्रसाद ने भी स्वयं इसके प्रतीकात्मक होने की पुष्टि इसकी प्रस्तावना में कर दी थी। इसलिए यह देखना रोचक है कि कामायनी किस प्रकार मानव-मन की विकास यात्रा का वर्णन करती है तथा किन अर्थों में मानवता विकास का?

जयशंकर प्रसाद ने लिखा कि "मनु अर्थात मन के दो पक्षों श्रद्धा हृदय (भावना) तथा इड़ा बुद्धि का संकेत दे तो आश्चर्य नहीं होगा"। इसका अर्थ है कि कामायनी में एक अर्थ में मानव-मन की विकास

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रचा है।
अपना सबकुछ खोने के बाद 'चिन्ता' का भाव सबसे पहले आता है। 'चिन्ता' में डूबे मन 'इच्छा' का आना स्वाभाविक है फिर आशा और विश्वास की उत्पत्ति होती है। यह भावना मनुष्य के किशोरावस्था से निर्धारित है। यहाँ 'काम, वासना' और उसके उपरांत 'लज्जा' का आना स्वभाविक है। इसके बाद प्रौढ़ावस्था में व्याप्त 'कर्म' और ईर्ष्या की ओर प्रेरित होती है। 'बुद्धि' भी बोध होती है इसमें अत्याधिक आविष्कार की चाह में 'संघर्ष' और 'निर्वेद' का होना भी अत्यन्त स्वभाविक है। वृद्धावस्था में मनुष्य 'दर्शन' व 'आनंद' की चाह रखता है। इस प्रकार कामायनी मानव-मन को विकास बताता है।

इतना ही कामायनी मानवता की विकास गाथा भी है। सबकुछ जब खो जाने पर सभ्यता की शुरुआत कैसे होती है? सभ्यता या सृजन की शुरुआत चिन्ता से होती है। मनुष्य चिन्तन किया। उसमें इच्छा और आशा के साथ अपने को कर्म से प्रेरित किया। शुरुआत में मनुष्य

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आलोचक निराशक था। धीरे-धीरे पलायन और भक्ति की ओर आगे बढ़ा।

इसके बाद मनुष्य ने अत्यधिक विकास की चाह में औद्योगिक क्रान्ति की तरफ आगमन हुआ। यह उसकी भौतिकवादी सोच व बुद्धिवाद को दिखाता है।

प्रसाद के अपने दर्शन 'प्रत्यभिज्ञा' के अनुसार अत्यधिक बौद्धिकता के कारण दुख मिलना अनिवार्य है। 'संघर्ष' और 'निर्वेद' इसी का परिणाम है।

इसके बाद रहस्य दर्शन और आनन्द सर्ग की व्याख्या इस दृष्टिकोण से भावुक है। जैसे इसके के अनुसार —

"ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न,
इच्छा क्यों पूरी हो मन की,
ये तीनों मिल न सके, यही
विडम्बना है जीवन की।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रसाद ने मनुष्य की शाश्वत समस्या की पहचान की तथा इसके समाधान को भी बताया—

"समरस थे जड़ चेतन, सुन्दर साकार बना था चेतना एक विलसती,"

इस प्रकार कामायनी मानवता तथा मानवता की विकास गाथा को है। परन्तु, प्रसाद ने इसके माध्यम से मानव की मूल समस्या व विडंबना को पकड़ने का प्रयास किया है।

अच्छा प्रयास

10½/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) अंगीरस की दृष्टि से कामायनी पर विचार कीजिये। 15

डॉ नगेन्द्र ने अपनी रचना 'कामायनी अध्ययन की समस्याएं' में 'कामायनी' को आधुनिक महाकाव्य माना है। महाकाव्य परम्परा में यह आवश्यक है कि रचना अपने प्रभाव की दृष्टि से एक अंगीरस धारण करे। अतः कामायनी में भी अंगीरस का अध्ययन आवश्यक है।

परम्परागत महाकाव्य की कसौटी में माना गया है - वीर, शान्त, शृंगार में कोई एक रस अंगीरस होना चाहिए।

'कामायनी' में यदि वीर रस की बात करें तो यह अधिक दिखाई नहीं पड़ता है। मनु का चरित्र ऐसा है कि यह वीर रस का भाव नहीं दिखाई पड़ता है।

अंगीरस के निर्धारण का आधार दो स्रोतों पर किया जा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सकता है प्रधान की ~~रचना~~ के प्रमुख चरित के आधार पर या रचना के प्रभाव की दृष्टि से या अन्त में जिस रस की जाति हो। चरित के आधार पर देखे तो मनु का चरित वीर, शान्त या श्रृंगार किसी को भी धारण नहीं करता है इड़ा के चरित में भी कोई एक रस प्रभावी नहीं। श्रद्धा में शान्त रस व श्रृंगार का प्रभाव दिखाई पड़ता है लेकिन अन्तिम वह भी समाप्त हो जाता है। इसलिए चरित आधार निर्धारण नहीं हो सकता है अंगीरस का।

प्रभाव की दृष्टि से देखे तो कोई एक निश्चित प्रभाव नहीं दिखाई पड़ता है।

अगर रचना के अन्त प्रभाव की दृष्टि से देखे तो- 'समरस थे जड़-चेतन, आनन्द अखण्ड ~~घना~~ था।'' इस आधार पर 'आनन्द सर्गको आधार बनाकर' डॉ नगेन्द्र ने कामायनी के अंगीरस को आनन्द रस 'कहा है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अभिनव गुप्त ने आनन्द रस को नव रसों का आदि स्रोत माना है।

इस प्रकार आधुनिक महाकाव्य 'कामायनी' का अंगीरस भी परम्परागत अंगीरस न होकर शैवाद्वैतवादी परम्परा का 'आनन्द रस' है।

अच्छा

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न ... के अतिरिक्त कुछ ... लिखें।
...se do not write ...hing except the ...tion number in ...space)

(ग) शक्ति-काव्य के प्रतिमान के रूप में 'राम की शक्ति-पूजा' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"राम की शक्ति पूजा" संश्लिष्ट संवेदना की रचना है। यह एक नई संवेदना को धारण करती है। निर्मला जैन ने इसे 'शक्ति काव्य' की उपमा दी है।

शक्ति काव्य की शुरुआत यूरोप में रोमांटिज्म आन्दोलन में हुई थी जिसमें परम्परागत रूढ़ियों को तोड़ने की चेतना है, नई वैयक्तिक चेतना है। यह प्रभाव छायावादी काव्य पर भी पड़ा। इसका सर्वाधिक प्रभाव निराला पर पड़ा जिनकी सर्वाधिक मुखर अभिव्यक्ति 'राम की शक्ति पूजा' में हुई।

शक्ति काव्य का प्रधान प्रतिमान है कि रचना में संभावना व शक्ति के स्रोतों की पहचान की जाए। 'शक्ति पूजा" में राम यही करते हैं

" शक्ति करो मौलिक कल्पना,
करो पूजन,
छोड़ दो समर, जब तक न सिद्धि हो रघुनन्दन।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रकार शक्ति काव्य पलायन का काव्य नहीं है। यह संघर्ष व विजय का काव्य है। 'शक्ति पूजा' इस अर्थ में भी शक्ति काव्य है। राम और निराला दोनों का आत्म संघर्ष लगातार चलता है—

"वह एक और मन रहा राम का
जो न थका।
जो नहीं जानता दैन्य नहीं जानता
विनय ॥"

इस प्रकार 'राम की शक्ति पूजा' अपनी संवेदना और शिल्प दोनों स्तरों पर शक्ति काव्य के प्रतिमानों को धारण करती है।

अच्छा प्रयास
सहज अंकित

7½ / 11

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) केवल नाराज़ ही नहीं, लड़ता था बाकायदा हमसे कि आप से पढ़े लिखे लोग खाली तमाशबीन ही बनकर बैठे रहेंगे तो इन गरीबों की लड़ाई कौन लड़ेगा? जहाँ दिन-दहाड़े इतना जुलुम होता हो, वहाँ कोई कैसे अलग-थलग बैठकर खाली कागज पोतता रह सकता है।

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत गद्यांश मन्नु भण्डारी के राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से लिया गया है। महेश द्वारा सक्सेना को बताया जा रहा है कि बिसू किस प्रकार बौद्धिक वर्ग को गरीबों के लिए लड़ने के लिए आगे आने के लिए कहता था।

व्याख्या :-

बिसू इस बात से नाराज था और लड़ता भी था कि बौद्धिक वर्ग तटस्थ रहता है वह वंचित वर्गों के हित में आवाज नहीं उठाता है। उसे आश्चर्य होता है कि जहाँ गरीबों का शोषण हो रहा है वहाँ बुद्धिजीवी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लोग तटस्थ होने रह जाते थे उन्हें शामिल होना चाहिए।

विशेष:-

1. प्रस्तुत पंक्तियाँ 'मध्यवर्ग की तटस्थता पर चोट करता है।
2. बौद्धिक वर्ग द्वारा वंचितों की लड़ाई न लड़ना वर्तमान में दिखाई देता है यह केवल भाषणों एवं लेखों तक ही शामिल होता है।
3. भन्नू भण्डारी 'बौद्धिक वर्ग' के दोहरे चरित्र को उद्घाटित करती है।
4. 'भारत-दुर्दशा' में भी यही भाव दिखाया गया।
5. भाषा शैली व्यंग्यप्रधान है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A.3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रत्येक परमाणु के मिलने में एक सम है, प्रत्येक हरी पत्ती के हिलने में एक लय है। मनुष्य ने अपना स्वर विकृत कर रक्खा है, इसी से तो उसका स्वर विश्व-वीणा में शीघ्र नहीं मिलता। पांडित्य के मारे जब देखो, जहाँ देखो बेताल-बेसुरा बोलेगा। पक्षियों को देखो, उनकी 'चहचह', 'कल-कल', 'छलछल' में, काकली में, रागिनि है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत गद्यांश ~~[illegible]~~ 'जयशंकर प्रसाद' के 'स्कन्दगुप्त' नाटक से लीया गया है। लेखक यहाँ बौद्धिकता का विरोध करते हुए प्रकृति की निश्छलता का महत्व बता रहा है।

व्याख्या :-

लेखक कहता है कि प्रकृति में प्रत्येक वस्तु में एक सामञ्जस्यता और लय है। मनुष्य ने बौद्धिकता में अपने मूल चरित को बिगाड़ लिया है। इसलिए मनुष्य विश्व-चेतन नहीं हो पा रहा है इसलिए मनुष्य जो बोलता है वह अति बौद्धिकता के कारण उनमें पोषण नहीं है। प्रकृति में एक राग है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रचनात्मक सौन्दर्य :-

(1) प्रस्तुत गद्यांश मनुष्य को प्रकृति से सीख लेने को प्रेरित करता है।

(2) प्रसाद का प्रत्यभिज्ञा दर्शन अतिशय बौद्धिकता का विरोध करता है। मनुष्य को अपनी सहज भावनाओं के साथ जीने पर जोर देता है।

(3) ज्ञान, क्रिया और इच्छा में समन्वय का भाव है।

(4) भाषा तत्समी है।

(5) चंद चद' कल-कल' संगीतात्मकता व ध्वन्यात्मकता को दिखाता है।

शैली?

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हा! भारतवर्ष को ऐसी मोह निद्रा ने घेरा है कि अब इस के उठने की आशा नहीं। सच है, जो जान-बूझकर सोता है उसे कौन जगा सकेगा? हा दैव! तेरे विचित्र चरित्र हैं, जो कल राज करता था वह आज जूते में टाँका उधार लगवाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ व प्रसंग:-

प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी नव जागरण के अग्रदूत भारतेन्दु हरिचन्द्र के नाटक "भारत दुर्दशा" से लिया गया है इसमें 'भारत वर्ष' के बेहोश हो जाने का वर्णन है

व्याख्या:- भारतवर्ष बेहोश हो गया। यद्यपि वह बेहोश न होकर जानबूझ कर सो रहा है इसलिए उसको जगाना मुश्किल है। भारतवर्ष कभी 'सोने की चिड़िया' था आज इतनी 'दुर्दशा' हो गयी है। कि वह हाथों पर निर्भर है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रचनात्मक सौन्दर्य :-

① प्रस्तुत गद्यांश में व्यंग्य शैली में 'भारत दुर्दशा' को व्यक्त किया है।

② भारत के नवजागरण को व्यक्त करती है कि इसमें भारत का अतीत स्वर्णिम था। 'भारत-भारती' के अनुसार भी 'ज्ञान-शिक्षा दान की आचार की, व्यवहार की व्यापार की विज्ञान की।"

③ अतीत के प्रति रोमानी भाव

④ 'लौंका' तद्भव शब्दों का प्रयोग।

⑤ व्यंग्य शैली- "जो जानबूझकर सोता है।"

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(घ) ऐसा आतंक आपने कहीं देखा नहीं होगा, साहब! लोगों के घर, ज़मीन और गाय-बैल ही रेहन नहीं रखे हुए हैं जोरावर और सरपंच के यहाँ, उनकी आवाज़ और जबान तक बंधक रखी हुई है। कोई चूँ तक नहीं कर सकता है।

सन्दर्भ-प्रसंग

प्रस्तुत गद्यांश मन्नू भण्डारी के राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से लीपा (लिया) गया है।

जोरावर व सरपंच द्वारा किये जा रहे शोषण को सक्सेना से बताया जा रहा है।

व्याख्या:- बिन्दा, सक्सेना से कहता है कि यहाँ आतंक का चरम रूप है लोगों को न केवल डराया गया है बल्कि उनके मन में इतना भय भर दिया जोरावर व सरपंच ने की लोग अपनी जबान तक बंधक रख दिये है कोई उनके खिलाफ नहीं बोलता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रचनात्मक सौन्दर्य :-

① शोषण के चरम रूप को व्यक्त किया गया। वस्तुओं के साथ व्यक्तियों की "आवाक-जावाक" तक बन्धक

② बंधुआ श्रम को दिखाया गया यद्यपि हमारा संविधान (Ar 23) में इसको मूल अधिकार के खिलाफ मानता है।

③ ~~अपराधी~~ और राजनीति का गठजोड़ जोवर व सरपंच

④ भाषा - सरल व व्यंग्यपूर्ण।

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) यह तुम नहीं, तुम्हारा स्वार्थ बोल रहा है। स्वार्थ को इतनी छूट देना ठीक नहीं कि वह विवेक को ही खा जाए। अखबारों को तो आज़ाद रहना ही चाहिए। वे ही तो हमारे कामों का, हमारी बातों का असली दर्पण होते हैं। मेरा तो उसूल है कि दर्पण को धुंधला मत होने दो। हाँ, अपनी छवि देखने का साहस होना चाहिए आदमी में।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत गद्यांश मन्नू भंडारी के मूल 'महाभोज' उपन्यास से लिया गया है। दा साहब, लखन को समझा रहे हैं कि पत्रकारिता कैसी होनी चाहिए।

व्याख्या :- दा साहब, लखन से कहते है कि स्वार्थी होना ठीक नहीं है स्वार्थी व्यक्ति अपने विवेक का प्रयोग नहीं करता है। अखबार आजाद होंगे तभी हमें दर्पण दिखा सकते हैं। अगर वे ही गंदे होंगे तो प्रकाश कैसे दिखेगा। व्यक्ति में इतनी हिम्मत हो की वह प्रकाश देखने का साहस करे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

रचनात्मक सौन्दर्य :-

(1) वर्तमान मीडिया के लिए भी सत्य है यह लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ होती है इसे स्वतंत्र निष्पक्ष होना चाहिए।

(2) सरकार को मीडिया पर आलोचना के लिए दण्ड व प्रतिबन्ध नहीं लगाना चाहिए बल्कि इनसे सीखें।

(3) इस नाटक में कथनी व करनी में अन्तर है वे बाद में मीडिया को नियंत्रित करते है

(4) इस नाटक के माध्यम से राजनीति के दोहरे चरित्र को उजागर किया गया है

(5) भाषा सरल व व्यंग्यात्मकता के साथ पूर्ण शैली - "विवाद की इतनी छूट - - - "

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'दिव्या' उपन्यास में मारिश के नारी-संबंधी दृष्टिकोण को प्रकट कीजिये। क्या यह दृष्टि उपन्यासकार यशपाल की नारी-दृष्टिकोण का भी प्रतिनिधित्व करती है? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'दिव्या' उपन्यास का नामकरण ही इसकी नारी विषयक दृष्टि का प्रमाण है। यशपाल ने समर्पण में नारी को ही समर्पित किया है। 'दिव्या' उपन्यास में मारिश के माध्यम से नारी विषयक दृष्टि का प्रतिपादन हुआ है।

मारिश द्वारा नारी को सृजन का स्रोत माना गया है वह बार-बार इस बात को दोहराता है कि नारी ही सृजन का मूल है और उसका सौन्दर्य मात्र उसके आकर्षण का विकार है यह आकर्षण उसे प्रकृति की आदि शक्ति से प्राप्त है।

"उसका सौन्दर्य उसके आकर्षण का विकार मात्र है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

मारिहा नारी को उसके सम्पूर्ण व्यक्तिगत व सामाजिक वैविध्य में दिखाता है। मारिहा का वह कथन कि नारी समस्त परिवर्तन के मूल है। वह सृष्टि में अमरता को धारण करती है क्योंकि उसमें सन्तानोत्पत्ति की क्षमता है परन्तु इसमें नारी-पुरुष दोनों की जिम्मेदारी है। मारिहा नारी को पुरुष का पूरक मानता है। दोनों को अन्योन्याश्रित मानता है।

मारिहा के अलावा आचार्य शुक्ल, प्रसाद, दिव्या आदि ने भी नारी विषयक दृष्टिकोण दिया परन्तु मारिहा ही केवल यशपाल की दृष्टि का प्रतिनिधित्व करता है। 'दिव्या' भी अन्तिम में आकर इसी दृष्टिकोण पर पहुँचती है। यशपाल की मार्क्सवादी नारी दृष्टि चार्वाक दर्शन के मारिश में व्यक्त हुई है।

और गहराई लाएं

10/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मैला आँचल में निहित रेणु की राजनीतिक चेतना का उद्घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'मैला आँचल' एक आंचलिक उपन्यास है उसमें राजनीति के प्रसंग बहुत क्षीण व महीन किन्तु उसकी चेतना सघन व तत्कालीन वातावरण का वाहक है।

'मैला आँचल' स्वतंत्रता के बाद का उपन्यास है यह उपन्यास एक ग्रामीण पृष्ठभूमि में रचा गया। लोकतंत्र की स्थापना से जनता सत्ता की धुरी बनी। सर्वाधिक जनसंख्या ग्रामीण की अंत। राजनीतिक संगठनों और दलों द्वारा ग्रामीण आंचल का केन्द्र में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्वाभाविक था।

'मैला आँचल' में व्यक्त राजनीतिक चेतना का वही कारण है धीरे-धीरे ग्रामीण जनता राजनीतिक गतिविधियों में केन्द्र में आती है राजनीतिक चेतना का प्रसार होता है बलदेव दास व गाँधी जी इत्यादि द्वारा ग्राम राजनीतिक चेतना को उभारा गया।

मैला आँचल में व्यक्त राजनीतिक चेतना में साम्प्रदायिक व जातिवादी व्यवस्था जैसे लक्षणों को भी दिखाया गया है।

इतना ही नहीं कमजोर वर्गों द्वारा अपने

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

आदिवासियों की मांग भी बड़े मुखर रूप से हो रही है यही एक नई 'आदिवासी राजनीति' का शुरुआती दौर था।

'मैला आँचल' में 'महाभोज' जैसा राजनीतिक माहौल व चेतना नहीं परन्तु फिर भी आंचलिकता के कलेवर में सशक्त राजनीतिक तत्वों की उपस्थिति अवश्य है।

8/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'महाभोज' नाम में उपन्यास का पूरा सार सन्निहित है। आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं? विवेचनात्मक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

" लावारिस लाश को गिद्ध नोंच नोंच कर खा रहे हैं।" और इसी से उपन्यास का सार व्यक्त होता है। 'महाभोज' नामकरण ही अपने आप में पर्याप्त है उपन्यास की पूरी संवेदना को व्यक्त करने के लिए। बिसू की मौत का 'महाभोज' सभी पक्ष, विपक्ष, मीडिया, तथा प्रशासन व अपराधी सभी मिलकर करते हैं।

उपन्यास में यही दिखाया गया है। बिसू की मौत के बाद किस तरह दा साहब, सुकुलबाबू, जोरावर सिन्हा आदि के लिए अवसर है कि वे अपना लाभ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

तेवाले / अन्त में सभी जगह इसकी महामारी है।

डा साहब अपनी पत्नी साहित आग खा रहे है और अपनी सरकार व सीह वस्पोत में भेजा आश्वासन है।

मुकुल बाबू, बिहारी आदि सबके बड़ी रैली करके खड़ी है पार्टी बना रहे वह भी बिंदु के मौत से ही इपका कायम है।

सिन्हा के घर पर पार्टी है वे 10 हो गये है।

~~मीडिया~~ के लोचन बाबू भी ~~खड़ी~~ से किताब छाप डा रहे है।

~~निवासना~~ और बिन्दा की बीवी रखने की बात है जबकि बिन्दा लोगों में है SIT बना है महामारी फैली है

लोकतंत्र व उसके मूल्यों की हत्या

सपनों की हत्या

प्रभाव दिखाई गाइड नहीं

2½ / 15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)